Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

ऐनाबैपटिस्ट विश्व सहभागिता रविवार
के लिए मार्गदर्शिका

24 जनवरी 2021 की विशेष आराधना के लिए एशिया की एमडब्ल्यूसी कलीसियाओं द्वारा तैयार मार्गदर्शिका
या मण्डली की सुविधानुसार किसी भी रविवार को मनाया जा सकता है

1 मूलविषय और शास्त्रपाठ

अ. मूलविषय:

साथ मिलकर बाधाओं को पार करते हुए यीशु के पीछे चलते चलें

ब. इस मूलविषय को क्यों चुना गया

इसी मूलविषय को इण्डोनेशिया 2021 सम्मेलन के लिए भी चुना गया है। विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट विश्वास के समुदाय के रूप में, हमारी प्राथमिकताओं का सारांश इन शब्दों में पाया जाता है।

हम यीशु के पीछे चलते हैं:

1. साथ मिलकर, अकेले नहीं।
2. हमें विभाजित करने का प्रयास करने वाली बाधाओं को पार करते हुए।

स. बाइबल पाठ

पुराना नियम:
यशायाह 55:1–6

भजन: 27

सुसमाचार:
यूहन्ना 4:1–42

नया नियम:
फिलिप्पियों 2:1–11

द. मूलपाठ और मूलविषय के बीच सम्बन्ध

बाइबल में अनेक स्थलों पर हम ऐसे लोगों के विषय में पढ़ते हैं, जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए बाधाओं को पार किया।

1. यशायाह भविष्यद्वक्ता लिखता है कि जब हम परमेश्वर की महिमा को परिलक्षित करते हैं तो हम सारी जातियों में उसके गवाह ठहरते हैं।
2. भजनकार कहता है कि हमें परमेश्वर की ओर से हियाव मिलता है, तब भी, जब हमें भयभीत रहते हैं।
3. यूहन्ना के सुसमाचार में, यीशु ने धर्म, नस्ल/जाति, और लिंग की बाधाओं को पार किया और सामरी स्त्री से मिला, जिसने तब अपने समुदाय में यह गवाही दिया कि यीशु ही मसीह है।
4. फिलिप्पियों में, पौलुस बताता है कि हमें किस प्रकार से आज्ञाकारिता में प्रभु यीशु का अनुसरण करना है, लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना है और स्वयं से अधिक दूसरों के हित की चिन्ता करना है।

हमें भी बाधाओं को पार करते हुए यीशु के पीछे चलने के लिए बुलाया गया है।

2 प्रार्थना निवेदन

हौई थान मेनोनाइट चर्च

अ. एशिया की एमडब्ल्यूसी सदस्य कलीसियाओं की ओर से:

1. एशिया की 23 सदस्य और एसोसिएट सदस्य कलीसियाओं (हांगकांग, भारत, इण्डोनेशिया, जापान, म्याँमार, नेपाल, फिलिप्पींस, दक्षिण कोरिया, ताइवान, थाईलैण्ड और वियतनाम) के लिए प्रार्थना करें। इनमें से अनेक देशों में मसीही लोग अल्पसंख्यक हैं। सताव और कष्ट झेल रही एमडब्ल्यूसी की सदस्य कलीसियाओं के लिए प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन्हें आगे बढ़ते रहने के लिए हियाव व आशा प्रदान करे।
2. एशिया की कलीसियाओं के लिए परमेश्वर की स्तुति हो: मसीह की देह के अंगों के लिए: वे हमारे साथ और एक दूसरे के साथ यीशु के प्रेम के बन्धन और पवित्र आत्मा की सहभागिता में जुड़े रहें। इस संसार में परमेश्वर की महिमा की गवाही देने के लिए एक दूसरे का ध्यान रखें, एक दूसरे को स्वीकार करें और एक दूसरे को तैयार करें।

ब. एमडब्ल्यूसी की ओर से:

1. परमेश्वर का धन्यवाद हो कि परमेश्वर के राज्य में संसार भर के ऐनाबैपटिस्ट भाषा और संस्कृति में अन्तर होने के बाद भी विश्वास में आपस में एकता के बन्ध में बन्धे हुए हैं।
2. एमडब्ल्यूसी परिवार में बढ़ते हुए सम्पर्क तंत्र के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो: मिशन नेटवर्क, सेवा नेटवर्क, स्वास्थ्य नेटवर्क, शान्ति नेटवर्क, और शिक्षा नेटवर्क।
3. उन सभी भाई बहनों के लिए धन्यवाद दें जो बीमारी, हिंसा, विपदा, या अन्याय के कारण संघर्ष कर रहे हैं। हम उन्हें अपना सकें। प्रभु हम सब के लिए सारी बातों को बदल दे।
4. एमडब्ल्यूसी सचिव सीज़र गार्सिया, एमडब्ल्यूसी एशियाई प्रतिनिधि अगुस मायान्तो (दक्षिणपूर्व एशिया प्रतिनिधि), सींथिया पीकॉक (दक्षिण एशिया) और यिर्मयाह चोई (उत्तरपूर्व एशिया) के लिए प्रार्थना करें, जबकि उन्हें एशिया और संसार भर में कलीसियाओं का नेतृत्व और सेवकाई करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।
5. इण्डोनेशिया में आयोजित आगामी विश्व सम्मेलन के लिए प्रार्थना करें। कार्यक्रमों की योजनाएं तैयार करने वाले भाई बहनों के लिए प्रार्थना करें जबकि वे सम्मेलन की नई तिथि के अनुरूप प्रबन्धों को ढालने में जुटे हुए हैं, और साथ ही एक सुरक्षित और आनन्दमय आयोजन के लिए दिशानिर्देश तैयार कर रहे हैं ताकि सेमरांग में हजारों की संख्या में आने वाले भाई बहनों की पहुनाई की जा सके।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

ऐनाबैपटिस्ट विश्व सहभागिता रविवार

3 गीत

1. नेव सारी मण्डली ही की
2. जब जीवन के दुख सागर में आँधी चलती है
3. ईश्वर ही की शान्ति
4. यीशु के पीछे मैं चलने लगा
5. मैं यीशु के साथ नूर में चलूंगा
6. प्रभु परमेश्वर, तू कितना भला है

जोरियाडीह चर्च, बीजेसीपीएम, भारत

4 रोचक गतिविधियाँ

अ. भारत में, सभी धर्म के लोग रंगबिरंगा सजावट करने के द्वारा प्रत्येक मन में आनन्द और उत्सव की भावना जगाते हैं। अनेक मसीही कलीसियाओं में, क्रिसमस और नये वर्ष के अवसर पर रंगीन कागजों, गुब्बारों, चमकीले झालरों का उपयोग करते हुए आराधना भवन, घर, और गलियों में सजावट की जाती है। और यह सजावट जनवरी और फरवरी तक बनी रहती है।

1. बच्चे और बड़े भी रंगीन स्क्रेप पेपर (और चमकीले टुकड़ों) का उपयोग करते हुए पेपर की लड़ी बना सकते हैं, इन्टरलॉकिंग लूप बना कर एकता को प्रदर्शित किया जा सकता है और लड़ियों की सहायता से बाधाओं को पार करना प्रदर्शित किया जा सकता है।
2. सभा स्थल के सामने वाले भाग को और प्रवेश वाले भाग को ढेर सारे फूलों और फूलों के हारों से सजाएं।

ब. जेपारा, इण्डोनेशिया में आराधना भवन के सामने वाले भाग में जवानिज कला, क्रूस को पारम्परिक जवाई पृष्ठभूमि के साथ जोड़ा गया है।

5 भेंट (एक समय का भोजन)

1. एमडब्ल्यूसी मण्डलियों को आमंत्रित करती है कि वे ऐनाबैपटिस्ट विश्व सहभागिता रविवार के अवसर पर हमारे वैश्विक ऐनाबैपटिस्ट चर्च समुदाय के लिए एक विशेष भेंट उठाएं। इस भेंट के लिए राशि निर्धारित करने का एक तरीका यह है कि हम अपने एक समय के भोजन में खर्च आने वाली राशि भेंट के रूप में चढ़ा सकते हैं जिससे कि एमडब्ल्यूसी के विश्वव्यापी विश्वास के समुदाय के व्यय को वहन किया जा सके।
2. एक समय के भोजन के बराबर की राशि भेंट में चढ़ाना, या एक समय के भोजन का त्याग करना एमडब्ल्यूसी के माध्यम से परमेश्वर की सेवकाई के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने और इसमें सहयोग करने का एक नम्र तरीका है।

6 अन्य सुझाव

अ. इस मार्गदर्शिका में

1. आराधना के लिए विधि, शास्त्रपाठ, और आशीषवचन
2. प्रार्थनाएं
3. उपदेश के लिए बाइबल स्थल
4. एशिया से गवाहियाँ
5. एशिया से सांस्कृतिक सुझाव

ब. ऑनलाइन (www.mwc-cmm.org/awfs)

1. तस्वीरें
2. गीतों के विडियो

इस मार्गदर्शिका में बाइबल पाठ, प्रार्थना, गीतों के सुझाव, उपदेश के लिए सुझाव, गवाहियाँ और अन्य संसाधन एमडब्ल्यूसी सदस्यों के द्वारा अपनी स्थानीय पृष्ठभूमि के अनुभवों के आधार पर शामिल किए गए हैं। आवश्यक नहीं है, कि इनमें दी गई शिक्षाएं एमडब्ल्यूसी के विचार हों।

संपर्कः

सींथिया पीकॉक, एमडब्ल्यूसी क्षेत्रीय प्रतिनिधि, दक्षिण एशिया
अगुस मायान्तो, एमडब्ल्यूसी क्षेत्रीय प्रतिनिधि, दक्षिणपूर्ण एशिया
यिर्मयाह चोई, एमडब्ल्यूसी क्षेत्रीय प्रतिनिधि, उत्तरपूर्व एशिया
पॉल पीनहान, एमडब्ल्यूसी कार्यकारिणी समिति सदस्य, एशिया
एमजेड इक्सानुद्दीन, एमडब्ल्यूसी कार्यकारिणी समिति सदस्य, एशिया

Mennonite
World Conference
A Community of Anabaptist
related Churches

ऐनाबैपटिस्ट विश्व सहभागिता रविवार

आराधना की पुकार और आशीष वचन

आराधना की पुकार

अगुवा: प्रभु यीशु के नाम में, भाईयों और बहनों, आराधना के इस समय में मैं आपका स्वागत करता हूँ।
मण्डली: परमेश्वर के भवन में साथ मिलकर संगति करना आनन्द की बात है।

अगुवा: तेरे अति अभिलाषी हो कर हम अपने स्वरों को ऊँचा करेंगे।
मण्डली: यह परमेश्वर को धन्यवाद करने और उसकी स्तुति करने का समय है।

अगुवा: (हाथ ऊपर कर): परमेश्वर पिता की शान्ति, प्रभु यीशु मसीह का प्रेम, और पवित्र आत्मा की सहभागिता हम में से प्रत्येक के साथ अब से लेकर सदा तक बनी रहे।
मण्डली: आमीन!

अगुवा: आइये हम एक दूसरे का अभिवादन करें और आज की आराधना में एक दूसरे का स्वागत करें।

पास्टर डेनांग क्रिस्टियावान, जीआईटीजे जेपारा (गेरेजालनिजिलि दी तानाह जावा), जेपारा, इण्डोनेशिया

आराधना की पुकार

अगुवा: आइये, सत्य की गवाही को सुनने के लिए अपने कान लगाएं!
मण्डली: हे प्रभु, हम तुझ से यह सीखने के लिए आएं हैं कि हमें घेरने वाली आत्मिक, मानसिक, और शारीरिक बाधाओं को पार करने की तेरी आज्ञाओं का पालन करें।

अगुवा: आइये, हम इस्राएल के यहोवा की महिमा को प्रगट करें!
मण्डली: हे प्रभु, हम तेरे सामने खड़े हैं, हमारी सहायता करे कि हम इस जगत में नमक और ज्योति बन कर रहें।

अगुवा: जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसे पुकारा!
मण्डली: हे प्रभु, हम तेरे सामने खड़े हैं, निकट आ, कि हम तुझे पुकारें।

निशान्त सिद्ध, मेनोनाइट चर्च इन इण्डिया, राजनाँदगाँव, भारत

उत्तरवादी पठन/प्रार्थना
(भजन 27 पर आधारित)

अगुवा: यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊँ? जब कुकर्मियों ने जो मुझे सताते और मुझी से बैर रखते थे, मुझे खा डालने के लिए मुझ पर चढ़ाई की, तब वे ही ठोकर खाकर गिर पड़े। चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूँगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बाँधे निश्चित रहूँगा।
मण्डली: हे प्रभु तेरी ज्योति और तेरा उद्धार जातिवाद, वर्गवाद, धर्मवाद, और व्यक्तिगतवाद की सारी बाधाओं को पार करते हुए दूर दूर फैलता जाए।

अगुवा: एक वर मैंने यहोवा से माँगा है, उसी के यत्न में लगा रहूँगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ, जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूँ। क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेग; अपने तम्बू के गुप्तस्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा। अब मेर सिर मेरे चारों ओर के शत्रुओं से ऊँचा होगा; और मैं यहोवा के तम्बू में जयजयकार के साथ बलिदान चढ़ाऊँगा; और उसका भजन गाऊँगा।
मण्डली: हे प्रभु, हम तेरा पवित्र मन्दिर हैं। हमें इच्छा और बोझ प्रदान कर कि हम इस महामारी के समय में, बेघर और बेराजगार हो गए लोगों के लिए एक शरण और सिर छिपाने का स्थान बनें।

अगुवा: हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूँ, तू मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दे। तू ने कहा है, "मेरे दर्शन के खोजी हो।" इसलिए मेरा मन तुझ से कहता है, "हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।" अपना मुख मुझ से न छिपा।
मण्डली: तेरे स्वरूप में सृजे गए हमारे बहुत से भाई और बहन हताशा और निराशा में पुकार रहे हैं। तेरी शान्ति, तेरा आनन्द और तेरी आशा, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में पाई जाती है, उनके जीवनों में वास करे।

ऐनाबैपटिस्ट
विश्व सहभागिता
रविवार

अगुवा: अपने दास को क्रोध करके न हटा, तू मेरा सहायक बना है। हे मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर मुझे त्याग न दे, और मुझे छोड़ न दे! मेरे माता पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।

मण्डली: हे प्रभु, अपनी कलीसिया का उपयोग कर कि वह हमारे आसपास के समुदायों के त्यागे हुओं को स्वीकार करे और उनका ध्यान रखे।

अगुवा: हे यहोवा, अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर, और मेरे द्रोहियों के कारण मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल। मुझ को मेरे सतानेवालों की इच्छा पर न छोड़, क्योंकि झूठे साक्षी जो उपद्रव करने की धुन में हैं मेरे विरुद्ध उठे हैं। यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवतों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूँगा, तो मैं मूर्च्छित हो जाता। यहोवा की बाट जोहता रह; हाँ यहोवा ही की बाट जोहता रह!

मण्डली: बीते वर्ष में कोरोना वायरस के कारण बहुत से लोगों के जीवन बदल गया है। हम में से अनेक अनिश्चियता, खतरे, और घटी के मार्ग पर चल रहे हैं। सहायता कर, कि हमारे माध्यम से वे यहोवा की भलाई को देख सकें, जबकि हम सब अपने जीवनों के एक समतल पथ की खोज करते हैं।

सब मिलकर: यहोवा की बाट जोहता रह;
हियाव बाँध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हाँ यहोवा ही की बाट जोहता रह!

निशान्त सिद्ध, मेनोनाइट चर्च इन इण्डिया,
राजनाँदगाँव, भारत

फुहिनरोग्कला चर्च इन थाईलैण्ड। फोटो: रेन रेम्पेल

प्रेरितों का विश्वास वचन
(एक साथ मिलकर)

मैं विश्वास करता हूँ, परमेश्वर पिता पर,
जो स्वर्ग और पृथ्वी का सर्वशक्तिमान सृजनहार है,

और उसके एकलौते पुत्र, अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट पर,
जो पवित्र आत्मा से गर्भ में आया,
कुंवारी मरियम से उत्पन्न हुआ,
पिन्तुस पीलातुस की आज्ञा से दुख उठाया,
क्रूस पर चढ़ाया गया, मर गया, और गाड़ा गया।
पाताल में उतरा,
तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा,
स्वर्ग पर चढ़ गया,
और परमेश्वर सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दाहिने ओर जा बैठा है,
जहाँ से वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने को फिर आएगा।

मैं विश्वास करता हूँ, पवित्र आत्मा पर,
एक ही ख्रिस्टियानी* कलीसिया,
पवित्रों की संगति,
पापों की क्षमा,
देह के जी उठने
और अनन्त जीवन पर, आमीन!

*अर्थात्, सब समय की और सब स्थान की सच्ची मसीही कलीसिया

जीआईटीजे इन इण्डोनेशिया और मेनोनाइट चर्च इन इण्डिया
द्वारा उपयोग में लाया जाता है

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

ऐनाबैपटिस्ट
विश्व सहभागिता
रविवार

आशीष वचन

मेरे भाइयों और बहनों, इस आराधना के समापन में,
आइये हम अपना हृदय परमेश्वर पर केन्द्रित करें।
जैसा मसीह यीशु का स्वाभाव था, वैसा ही हमारा भी स्वाभाव हो,
हम प्रेम का जीवन बिताने के लिए स्वतंत्र किए जाएं।
विभाजन करने वाली रेखाओं को पार करते हुए यीशु के पीछे उसके मार्ग पर चलें।
प्रभु यीशु में अपनी सहभागिता में प्रेम और शान्ति का जीवन बिताएं।

हमारे हृदयों और हमारे संसार में प्रेम और आपसी समझ कायम हो।
तूफान के मध्य शान्ति और मित्रता हमारे लिए एक शरण स्थान हो।
हमें सत्य कहने, मेल का प्रचार करने और तरस दिखाने के लिए सामर्थ प्रदान कर।
हमें पवित्र आत्मा की प्रेरणा, परमेश्वर की आशीष और उसका प्रेम, और प्रभु यीशु मसीह की शान्ति का अनुभव प्रदान कर, ताकि हम संसार में धर्म, न्याय, और सहभागिता कायम करने के लिए एकजुट हो सकें।
आमीन।

यह कहते हुए एक दूसरे के लिए शान्ति की कामना करें:
मसीह की शान्ति आप को मिले!
और आपको भी मिले।

पास्टर देनाँग क्रिस्यिावान, जीआईटीजे जेपारा
(जिरेजाइन्जिल दी तनाह जावा),
जेपारा, इण्डोनेशिया।

मेनोनाइट चर्च, राजनाँदगाँव एमडब्ल्यूसी परिवार को हाथ हिला कर अभिवादन करते हुए। फोटो: हेंक स्टेनवर्स

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

ऐनाबैपटिस्ट
विश्व सहभागिता
रविवार

प्रार्थनाएं

प्रेम करने की आज्ञा, और मन फिराव की प्रार्थना

प्रिय भाइयों और बहनों, यीशु मसीह का चेला बनने का अर्थ होता है उसके पीछे चलना और उसका अनुकरण करते हुए उसकी आज्ञाओं का पालन करना। प्रभु यीशु मसीह ने हमें एक बड़ी आज्ञा दी है, प्रेम करने की आज्ञा: ''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।''

प्रिय पिता, हम तेरे अनुग्रह के लिए तेरे आभारी हैं, जिसने हमें तेरे चेलों के रूप में हमें बुलाया है कि हम तेरे परिवार के रूप में अपने प्रेम का उत्सव मनाएं। हम तेरे आभारी हैं कि तूने हमें अपने चेलों के रूप में यह स्मरण भी दिलाया है कि हम अपने सारे मन से तुझ से प्रेम रखें, और अपने पड़ोसी से प्रेम रखें। हम यह मानते हैं कि तेरी इच्छा पूरी करने, तुझ से प्रेम रखने, और अपने पड़ोसियों से प्रेम रखने में हमारी बहुत सी कमजोरियाँ हैं: स्वार्थ, भय, हमें अलग करने वाली सीमाओं को पार करने में हमारी अनिच्छा। इसलिए हम तुझ से विनती करते हैं कि तू हमसे प्रेम कर और हमें उत्साहित कर कि हम तेरे आत्मा की सामर्थ से तुझसे प्रेम करते रहे और अपने पड़ोसी से प्रेम रखें।

पास्टर डेनाँग क्रिस्टियावान, जीआईटीजे जेपारा
(जेरेजान्जिलि दी तनाह जावा), जेपारा, इण्डोनेशिया

एक साथ मिलकर प्रभु की प्रार्थना करें।

एशिया की अनेक कलीसियाओं में इसे समय समय पर उपयोग में लाया जाता है।

प्रार्थना सभा 1 जनवरी 2020 बाइबल मिशनरी चर्च, म्याँमार,
फोटो: आमोस चिन

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

ऐनाबैपटिस्ट
विश्व सहभागिता
रविवार

उपदेश के लिए बाइबल की पृष्ठभूमि

पुराना नियम: यशायाह 55:1–6

कभी कभी हम सोचते हैं कि ‘‘भविष्यद्वक्ता’’ किसी ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जो भविष्यद्वाणी करने में निपुण होता है, अर्थात्, वह भविष्य में होने वाली बातों को पहले से बता देता है। परन्तु ‘‘भविष्यद्वक्ता’’ (प्रोफेट, इब्रानी में *‘नबी’*) का मूल अर्थ, ‘‘सोते के समान फूट पड़ना’’ होता है, जिसका अर्थ है कि भविष्यद्वक्ता पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित हो कर परमेश्वर के वचन को एक जीवित सोते के समान उण्डेलता था। बाइबल के भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर से जो कुछ उसके लोगों के लिए सुना, उसे उण्डेला। उन दिनों की मूर्तिपूजा के कारण पवित्र आत्मा ने उन्हें प्रेरित किया कि वे परमेश्वर की ओर से बोले। उनकी कुछ भविष्यद्वाणियाँ उनके समय के कुछ स्थानीय मुद्दों से सम्बन्धित थी, और कुछ भविष्यद्वाणियाँ भविष्य से सम्बन्धित थीं।

यशायाह के समान भविष्यद्वाणी की किसी पुस्तक को ठीक ठीक समझने के लिए, हमें उस समय और सन्दर्भ को समझना आवश्यक है जिसमें भविष्यद्वक्ता रहा करते थे। पारम्परिक तौर पर यह माना जाता है कि यशायाह यरूशलेम में रहा करता था, औरउसने 700 ई.पू. के आसपास लगभग 70 वर्षों में इस पुस्तक को लिखा। इस समय अश्शूर के सम्राज्य के प्रभाव के कारण यहूदा का पतन हो रहा था, परन्तु यह 586 ई.पू. में यरूशलेम के पतन से काफी पहले की बात है।

वर्तमान विद्वानों को यह मानना है कि यशायाह की पुस्तक वास्तव में यशायाह नाम के ही तीन अलग अलग लोगों के द्वारा लिखी गईं, और इसे लगभग 300 वर्ष की अवधि में संकलित किया गया – 587 ई.पू. में यरूशलेम के पतन के पहले और बाद भी।

यशायाह की पुस्तक तीन कालों (तीन लेखकों) में विभाजित है। पहला यशायाह (अध्याय 1–39) राजा उज्जियाह, योतान, अहान और हिज्जकिय्याह के शासन काल की घटनाएं हैं जो यरूशलेम के पतन और बाबुल की बन्धुआई से पहले का समय था।

दूसरा यशायाह (अध्याय 40–50) और तीसरा यशायाह (अध्याय 56–66) यरूशलेम के पतन के बाद की घटनाओं पर आधारित हैं, जब बन्धुआई के कुछ समय बाद बन्धुओं को यरूशलेम लौटने की अनुमति दी गई ताकि वे अपने समुदाय और अपने विश्वास को फिर से स्थापित करने का प्रयास करें। आज का शास्त्रपाठ, यशायाह 55, दूसरा यशायाह का हिस्सा है।

दूसरे यशायाह ने परमेश्वर से प्रकाशन प्राप्त किया, और यहूदा का आव्हान किया कि वे बाबुल के अपने आरामदायक और समृद्ध घरों को छोड़ कर उजाड़ और नाश कर दिए यरुशलेम नगर को लौट जाएं और मन्दिर का पुनर्निमाण करें। जब बन्धुए उजाड़ नगर को वापस लौटे, तो परमेश्वर ने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि दाऊद के साथ परमेश्वर द्वारा बान्धी गई वाचा आज भी कायम है, जो लोगों के लिए एक साक्षी और और सब जातियों के सामने परमेश्वर के लोगों की एक गवाही है। बन्धुआई के बाद इस्राएल के लोगों को एक नाश कर दिए नगर को लौटना, उनके जीवन की वास्तविकता और भविष्यद्वक्ता द्वारा वर्णन की गई सुन्दरता के बीच एक बड़ा अन्तर सामने ला देता है। मन्दिर को नष्ट कर दिया गया था। परमेश्वर की महिमा कहाँ गई? ऐसा प्रतीत नहीं होता कि यह महिमा अब यरूशलेम में है। तौभी परमेश्वर ने उन्हें उनके सुरक्षित खोह से बाहर बुलाया, कि वे अपने आत्मिक जीवन की यात्रा में बढ़ें और यरूशलेम का पुनर्निर्माण करें।

विचारों की यह श्रृंखला वर्तमान में हमारे जीवनों में इस प्रकार से लागू होती है:

- सारी जातियाँ दाऊद और परमेश्वर के लोगों के साथ बान्धी गई वाचा में परमेश्वर की महिमा को देख सकें।
- सारी जातियाँ यीशु मसीह में परमेश्वर की महिमा को देख सकें।
- सारी जातियाँ मसीहियों के जीवनों में परमेश्वर की महिमा देख सकें।

आप किस स्थान पर (जीवन के किस क्षेत्र में) समृद्धि और सुविधा का जीवन व्यतीत कर रहे हैं? परमेश्वर आपसे आपकी आरामदायक खोह से बाहर निकलने के लिए किस प्रकार से बुलाहट दे रहा है? क्या आपकी आरामदायक खोह से बाहर निकलना परमेश्वर के लिए एक गवाही ठहरेगा, और परमेश्वर को महिमा देगा? क्या आपको बाहर निकलने का साहस प्राप्त होगा? क्या हमें यह कहने का हियाव होगा, ‘‘मैं यहाँ हूँ, मुझे भेज’’?

परमेश्वर लोगों को बुला रहा है कि वे अपने शान्त और सुविधाजनक जीवनों को छोड़ कर बाहर निकलें और अनिश्चयता से भरे एक उजाड़ संसार में प्रवेश करें। हमारे आनन्दमय जीवन में, क्या हम परमेश्वर के अनुग्रह को भूल चुके हैं? क्या जीवन में भरपूरी होने के कारण इस भरपूरी में आप खो चुके हैं?

यशायाह 55 के कुछ पदों में मानवीकरण का प्रयोग किया गया है, जहाँ ‘‘बुद्धि’’ को एक स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन पदों में, बुद्धि, प्रत्येक व्यक्ति को आमंत्रित कर रही है कि वह शानदार भोजन का आनन्द उठाने के लिए आए जो

बुद्धि से प्राप्त होता है। यह सामरी स्त्री के साथ प्रभु यीशु मसीह की बातचीत की तरह सुनाई देता है, जिसमें उस जीवन के जल का प्रस्ताव रखा गया था जिसे पीने वाला फिर प्यासा नहीं होता। सिर्फ परमेश्वर ही हमारी प्यास और हमारी भूख को मिटा सकता है, और हमें जीवन और बुद्धि प्रदान कर सकता है।

हम अपने हृदयों में शान्ति पाने के लिए प्रभु यीशु मसीह पर निर्भर रहते हैं – इसलिए नहीं कि बाहरी वातावरण स्थिर है, और इसलिए नहीं कि हम अपनी परिस्थितियों को नियंत्रित कर सकते हैं। परन्तु इसलिए, क्योंकि हम जानते हैं कि हम मसीहियों के भविष्य पर किसका नियंत्रण है। परमेश्वर लोगों के सामने परमेश्वर की महिमा की गवाही देने की हमें सामर्थ प्रदान करता है, चाहे हमारे आसपास के वातावरण में कुछ भी हो रहा हो।

शिष्यता का अर्थ होता है यीशु के पीछे चलना। शिष्यता का अर्थ होता है कि हम जीवन, अपनी आदतों, अपनी जीवनशैली और जीवन की उन वस्तुओं के प्रति अपने रवैये को त्याग दे जिन्हें हम अब तक महत्व देते आए हैं। यशायाह को परमेश्वर ने बुलाया था कि वह यहूदा के लोगों को उनके सुविधाजनक जीवनों को छोड़ कर बाहर आने का आव्हान करे, और परमेश्वर का अनुसरण करते हुए वापस यरूशलेम को जाए, ताकि जातियों के मध्य परमेश्वर के महिमा के साक्षी बनें।

आइये हम वर्तमान में परमेश्वर द्वारा हमें दी जा रही बुलाहट को पहचाने। इसके लिए हमें अपनी सुरक्षित खोह को छोड़ना पड़ेगा। एक ''अनिश्चित'' समय में प्रवेश करने के लिए अपने आप को तैयार करें जैसे कि वह अनिश्चित भविष्य, जो इस विश्वव्यापी महामारी के कारण बहुत से लोगों के सामने आ खड़ा हुआ है, यह हांगकांग की उस चिन्ता के समान है कि जब हांगकांग पर चीन का कब्जा और बढ़ जाएगा, तो क्या होगा। वास्तविक संतोष तब मिलता है जब हम परमेश्वर को तब ढूंढ़ते हैं, जब तक वह मिल सकता है, और तब पुकारते हैं, जब वह निकट है। इसी तरह से हम लोगों के सामने एक साक्षी ठहरेंगे, और परमेश्वर की महिमा होगी।

पास्टर यिर्मयाह चोय,
हाँग काँग मेनोनाइट चर्च

भजन: 27

दाऊद का यह भजन आराधना के महत्व को सामने रखता है, यह व्यक्तिगत आराधना, सामूहिक आराधना, या ऑनलाइन आराधना सब प्रकार की आराधना पर लागू होता है। इस भजन में भावनाओं की उस विस्तार को प्रगट करता है जिसे हम परमेश्वर और एक दूसरे के साथ साझा करते हैं: परमेश्वर की उपस्थिति में हियाव, और यह भय कि परमेश्वर अनुपस्थित है। यह सब आराधना का हिस्सा है।

सुसमाचार: यूहन्ना 4:1–42

इस मुलाकात का आरम्भ तब होता है जब यीशु सामरिया में से हो कर जा रहा था। सामरिया के लोग इस्राएल के लोगों के शत्रु थे। दोनों ही जातियाँ मानती थीं कि वे ही इब्राहीम की वाचा के सच्चे वारिस हैं और दोनों का ही मानना था कि वे ही परमेश्वर की आराधना सच्चाई से और ठीक ठीक तरीके से करते हैं। हो सकता है कि आपने भी इस तरह की बातें अपनी कलीसिया में सुना होगा, कि परमेश्वर की आराधना करने का हमारा तरीका ही सही है।

नेपाल के एक ब्रदरन इन ख्राइस्ट चर्च में युवा नृत्य कर आराधना करते हुए: 2018, फोटो: हेंक स्टेनवर्स

यीशु एक कुंए पर पानी पीने के लिए ठहरता है, यह कोई साधारण कुँआ नहीं था, परन्तु वह कुँआ था जिसे याकूब ने लगभग 2000 वर्ष पूर्ण खोदा था। इस कुंए पर यीशु की मुलाकात एक सामरी स्त्री से होती है, दिन के इस समय और कोई स्त्री जल भरने को कुंए पर आया नहीं करती थी। यीशु ने सीधे सीधे इस स्त्री से पीने के लिए पानी मांगा। स्त्री ने व्यंग्य और संदेह के भाव से उससे कहा कि वह उससे पानी क्यों मांग रहा है। उस स्त्री के पतियों और जीवन के जल व सच्ची आराधना के विषय में उनके मध्य एक लम्बी बातचीत होती है।

वह इस अवसर का लाभ उठाते हुए एक प्रश्न पूछ लेती है जो उसे लम्बे समय से सता रहा था। ''हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम यहूदी कहते हो कि वह जगह जहाँ आराधना करनी चाहिए, यरूशलेम में है।'' दोनों में से सत्य कौन है? यहूदी यह मानते थे कि यरूशलेम में सिय्योन पर्वत परमेश्वर का वास स्थान है, जबकि सामरी यह मानते थे कि गिरिज्जीम पर्वत ही परमेश्वर का वास स्थान है, यह याकूब के कुंए से काफी निकट था। यीशु ने उत्तर दिया कि

समय आने वाला है, जब न तो यरुशलेम और न सामरियों के पर्वत पर आराधना की जाएगी। यीशु ने कहा, कि सच्चे आराधक आत्मा में परमेश्वर की आराधना करें, वे आत्मा और सच्चाई से भजन करेंगे, किसी स्थान पर नहीं। यीशु ने आराधकों के रूप में लोगों पर ध्यान केन्द्रित किया, स्थान पर नहीं।

जीजस विलेज चर्च इन साउथ कोरिया द्वारा पेन्नसिलवेनिया, हैरिसबर्ग, यूएसए में आयोजित 16 विश्व सम्मेलन के अवसर पर ग्लोबल विलेज के लिए एक डिस्प्ले की तैयारी। फोटोः सू जीन हवांग

यह एक दिलचस्प घटना है। सामरियों और यहूदियों के बीच में उन्हें विभाजित करने वाली एक भारी भरकम दीवार थी। यह स्त्री एक गैर है, एक शत्रु है, एक बैरी सामरी है – और इससे भी बढ़ कर, एक स्त्री है। जब यीशु के चेले वापस वहाँ लौटे तो इस सामरी स्त्री से बातचीत करते हुए यीशु को देखना ही उनकी दृष्टि में शर्मनाक था। तौभी प्रभु यीशु मसीह ने इस सामरी स्त्री पर इतनी ढेर सारी बातों को प्रगट किया जितना उसने अब तक अपने चेलों पर भी प्रगट नहीं किया था। यीशु ने जातिवाद, नस्लवाद, धर्मवाद, और लिंगवाद की विभाजित करने वाली दीवारों को चीरते हुए उस पर सत्य को प्रगट किया। वह समझ गई कि यीशु ही मसीह है, इस बात को सामरियों ने भी माना, यद्यपि उस रीति से नहीं, जिस रीति से यहूदियों ने माना था। यीशु ने इस सामरी स्त्री को बताया कि, वही वास्तव में मसीह है, जीवन का वह जल जो अनन्त जीवन प्रदान करता है।

इस कहानी के कुछ ही खण्डों में, सामरियों और यहूदियों की सारी की सारी मान्यताएं पूरी तरह से पलट दी गईं। प्रत्येक को अपनी मान्यताओं के विषय में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

- परमेश्वर आत्मा है, और किसी स्थान से बन्धा हुआ नहीं है। न यरुशलेम, न ही गिरिज्जीम।
- आराधना आत्मा में हो कर की जाती है, यह लोगों के हृदय से निकलती है, किसी विशेष तरीके से किए बलिदान या रीतिविधि से नहीं।
- यीशु प्रत्येक व्यक्ति का मसीह है, चाहे यहूदी या सामरी – यहाँ तक कि अन्यजातियों का भी, इस बात को आरम्भिक कलीसिया ने बहुत धीरे धीरे सीखा।
- विभाजित/बाधित करने वाली ऐसी कोई दीवार नहीं है, जो यीशु को रोक सके।

यह कल्पना कर पाना हमारे लिए कठिन होगा कि उस समय के लिए इस प्रकार के विचार कितने अटपटे प्रतीत होते थे। और तौभी, ये विचार इतने रोचक हैं कि सामरी स्त्री ने यीशु के साथ अपनी मुलाकात के बारे में अपने प्रत्येक परिचित को बताया, और बहुत से सामरियों ने विश्वास किया कि यीशु ही मसीह है। सामरी स्त्री प्यासी है, उस सुसमाचार की बेहताशा प्यासी है, जिसे यीशु ने उसे सुनाया, वह बेहताशा प्यासी है कि उसे जाना जाए और उससे प्रेम किया जाए।

क्या आप अपने जीवन के किसी ऐसे समय को स्मरण कर सकते हैं जब आप इतने हताश थे कि सामने कोई रास्ता नजर हीं नही आ रहा था, और ऐसा लगने लगा था कि परमेश्वर ने आप को त्याग दिया है, या आपके लोगों ने आपको त्याग दिया है? हताशा के ये समय हम में से प्रत्येक के जीवन की यात्रा का एक हिस्सा हैं?

क्या आप अपने जीवन के किसी ऐसे समय को स्मरण कर सकते हैं जब आपने परमेश्वर के प्रेम को कार्य करते हुए देखा, जो विभाजित करने वाली दीवार के मध्य मार्ग निकाल रहा था? परम्परा और स्थान, जातिवाद और नस्लवाद की विभाजित करने वाली दीवार को चीरते हुए क्या आप यीशु के पीछे पीछे चलना चाहते हैं, कि मसीह के कार्य का प्रचार करें?

परमेश्वर किसी स्थान या परम्परा से बन्धा हुआ नहीं है। सामरी स्त्री के समान, आइये हम पवित्र आत्मा के कार्य के प्रति अपने भीतर प्यास उत्पन्न करें; आइये हम परमेश्वर के निष्पक्ष प्रेम के मार्ग में बाधाओं को पार करते आगे बढ़ते जाएं।

- परमेश्वर के आत्मा तक हम सब की, और इस संसार के प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच है।
- आराधना आत्मा में होती है, इस तक हर व्यक्ति पहुँच सकता है, उन तरीकों से भी जो प्रचलित नहीं हैं या किसी को गलत प्रतीत होते हैं।
- यीशु ही मसीह है, इस संसार का उद्धारकर्ता, उन लोगों का भी जो हमारे समाज में बाधाओं की दूसरी ओर है।
- परमेश्वर का प्रेम हमें परमेश्वर से अलग करने वाली हर एक बाधा को पार करता है।

Mennonite
World Conference
A Community of Anabaptist
related Churches

ऐनाबैपटिस्ट विश्व सहभागिता रविवार

परमेश्वर के लोग, विश्वास के लोग होने का अर्थ क्या है, जबकि परमेश्वर के प्रेम और आराधना करने का हमारा तरीका समय और स्थान के साथ बदलता जाता है?

हम एक सांस्कृतिक लोग हैं: हमारी परम्परा और भाषाएं वे माध्यम हैं जिसके द्वारा हम परमेश्वर को समझते हैं और उसकी आराधना करते हैं। हमारी सांस्कृतिक परम्पराएं अनेक सार्थक तरीकों से हमारा आधार हैं। हमारे तौर तरीके सुविधाजनक और हमारे जाने पहचाने हैं, परन्तु हमारा तरीका ही एकमात्र तरीका नहीं है जिससे कि परमेश्वर की आराधना की जा सकती है। अनेक बार हम डरते हैं कि परमेश्वर को अनुभव करने का और हमारी आराधना का तरीका हमारे बीच विभाजन ला सकता है और हमें बिखरा सकता है।

परमेश्वर आत्मा है। हम आत्मा में आराधना करते हैं। और परमेश्वर के प्रेम के विषय में यीशु का सुसमाचार प्रत्येक व्यक्ति के लिए है, चाहे वह किसी भी संस्कृति, पृष्ठभूमि या भाषा का हो। हमें विभाजित करने वाली बाधाओं के पार अलग अलग लोगों द्वारा परमेश्वर के प्रेम का अनुभव किस प्रकार से किया जाता है, इसके विषय में हमें काफी कुछ सीखने की आवश्यकता है। हमें इन बाधाओं के पार करने के लिए यीशु से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है।

अर्लि क्लासन,
एमडब्ल्यूसी कोआर्डिनेटर ऑफ रिजनल रिप्रेसेंटेटिव्हस, कनाडा

नया नियम: फिलिप्पियों 2:1–11

फिलिप्पियों को लिखी अपनी पत्री में, पौलुस ने कलीसिया को एकता की भावना रखने और एक दूसरे का ध्यान रखने का सुझाव दिया है। मण्डली को कहा गया है कि "एक मन रहो, और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो" (2:2); प्रेम, ढाढ़स, सहभागिता, करूणा, और दया के साथ एक दूसरे का ध्यान रखो (2:1)। कलीसिया के सदस्यों को अपने हित की चिन्ता नहीं करना है, परन्तु स्वयं को दीन करते हुए पहले दूसरों का ध्यान रखना है (2:3), और दूसरों के हित की चिन्ता करना है (2:4)।

एकता और एक दूसरे की चिन्ता करने के द्वारा ही एक सच्ची सहभागिता रूप लेती है। ध्यान रखें कि संगति का अर्थ लोगों की एक भीड़ नहीं है। संगति का अर्थ एक साथ रहना (साथ जीना) नहीं है, परन्तु इसका अर्थ एक दूसरे के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा रहना (एक दूसरे के लिए जीना) है। संगति का अर्थ मात्र एक स्थान पर जमा होना नहीं है, परन्तु एक दूसरे के साथ बन्ध कर एक दूसरे को अपना लेना है।

इस प्रकार की संगति तभी सम्भव है यदि प्रत्येक व्यक्ति लोगों को विभाजित करने वाली सीमाओं को पार करने का साहस करता है (2:3–4)। इसके लिए लोगों को कदम उठाने के लिए प्रेरित करने का बल चाहिए, जो आत्मिकता या एक ऐसी प्रेरणा में पाई जाती है जो आचरण में प्रगट हो। इस आत्मिकता के बिना एकता, और देखभाल एक प्राणहीन कार्य के सिवाय और कुछ नहीं है।

हमारी ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं की परम्परा में, शिष्यता को हमेशा आचरण और नैतिकता के अर्थ में समझा जाता है। परन्तु नैतिकता की जड़ आत्मिकता में पाई जानी चाहिए जो एक जीवित कार्य की नींव है।

किस प्रकार की आत्मिकता हमें सीमाओं के पार ले जा सकती है ताकि एकता और देखभाल को साकार किया जा सके? इसका उत्तर पौलुस की बात में पाया जाता है, कि हमें अपने विचारों और भावनाओं को मसीह यीशु पर केन्द्रित करना है (2:5)। हम यीशु का अनुसरण न सिर्फ उन कार्यों को करने के द्वारा करते हैं जिन्हें उसने किया, परन्तु मसीह के समान मन रखने के द्वारा भी। इसका अर्थ होता है, अपने आप को मसीह के समान शून्य कर देना (2:6–7)। "शून्य" का अर्थ हो सकता है, जिस पर हमारा अधिकार है, उसे छोड़ देना, अपने आप को कम महत्वपूर्ण बताना। यीशु द्वारा अपनी महिमा को छोड़ देने और एक दास का रूप ले लेने में इस बात को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसलिए, मसीह का स्वाभाव होने का अर्थ है कि हमें मसीह के समान सोचना है, उसके समान प्रेरित होना है, जिसने स्वयं को दूसरों के लिए समर्पित कर दिया।

जीकेएमआई अनुग्रेह रेयोन केमबानगन, जर्काता, इण्डोनेशिया में पैर धाने की विधि। फोटो: साभार

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

ऐनाबैपटिस्ट विश्व सहभागिता रविवार

अपने आप को शून्य करने पर हमारे भीतर इच्छा उत्पन्न होगी कि हम दूसरों से अलग करने वाली सीमाओं को पार करें। प्रभु यीशु मसीह, जिसने अपने आप को शून्य किया और मनुष्य बना, हमारे सामने इसका एक उदाहरण रखता है। वह परमेश्वर है, जिसने परमेश्वर और मनुष्य को, अनन्त और नश्वर को अलग करने वाली सीमा को पार किया। परमेश्वर जिसने स्वयं को शून्य किया, उसने मनुष्य बनना स्वीकार कर लिया, ताकि वह उन लोगों का उद्धार करे जिनसे वह प्रेम रखता है। यह उसके चेलों के रूप में हमारे सामने यह बुलाहट है कि हम अपने आप को शून्य कर दें। वर्तमान के समय के विचारों से यह ठीक उल्टा विचार है। जबकि लोग प्रथम स्थान प्राप्त करना चाहते हैं और दूसरों को अपना बैरी बना लेते हैं, मसीह का स्वाभाव हमें आमंत्रित करता है कि हम अपनी महत्वाकांक्षाओं और हितों को त्याग कर इन विभाजित करने वाली दीवारों को पार करने की पहल करें और दूसरों के साथ मिलकर रहें। जब लोग नस्लीय, जातीय, या धार्मिक पहचान के कारण दूसरे वर्ग के लोगों को अनदेखा करते हैं, तभी मसीह का स्वाभाव हमें न्यौता देता है कि हम दूसरों के साथ मिल कर रहने के लिए अपनी पहचान की सीमाओं को पार करें।

दूसरी महत्वपूर्ण बात हम यह सीखते हैं कि स्वयं को शून्य करने का विचार हमें प्रेरित करता है कि हम दूसरों के साथ अपना समय और स्थान साझा करें। यदि हम ''शून्य'' शब्द की ओर ध्यान दें तो इसका अर्थ खाली करना या उण्डेलना भी होता है, ताकि हमारे भीतर स्थान रहें जिसे दूसरों के लिए भरा जा सके। प्रभु यीशु जिसने एक दास बनने के लिए स्वयं को शून्य कर दिया अपने उस प्रेम को प्रगट करता है जो जीवन को हमारे साथ मनुष्य के रूप में बाँटना चाहता है।

जब तक हम स्वयं को शून्य नहीं करते, तब तक हमारे पास दूसरों के लिए कोई स्थान नहीं होता। इसलिए, स्वयं को शून्य करना ''पहुनाई'' का एक चित्र हो सकता है, जिस प्रकार की पहुनाई परमेश्वर ने मनुष्य को अपनाने के द्वारा प्रगट किया। यह महत्वपूर्ण हैं। हमें ध्यान देने की आवश्यकता है। दूसरों के साथ संगति करने के लिए बाधाओं को पार करने के लिए दूसरों के साथ अपना स्थान साझा करने की इच्छा अनिवार्य है। स्वयं को शून्य किए बिना और पहुनाई के भाव से दूसरे के साथ अपना स्थान साझा किए बिना, बाधाएं या सीमाएं पार करने की हमारी इच्छा हिंसा, आक्रमण और दूसरों को अपने आधीन करने की भावना में बदल जाएगी, दूसरों को अपनाने या उनकी सेवा करने की भावना में नहीं। सीमाओं को पार करने का अर्थ यह है कि हम दूसरे लोगों के स्थान में प्रवेश करते हैं, और साथ ही साथ दूसरों के लिए स्थान बनाते हैं कि वे हमारे स्थान में प्रवेश करें। अपना स्थान दूसरों के साथ बाँटने की इच्छा के बिना, कोई सहभागिता, और कोई अपनाया जाना सम्भव नहीं है।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि बाधाओं को पार करने और अपना स्थान दूसरों के साथ साझा करने में हमें जोखिम का सामना करना पड़ेगा। हम खतरे में पड़ सकते हैं। दूसरों के लिए अपना स्थान खोलने के द्वारा हम स्वयं को खोलते हैं और अपनी कमजोरी को दूसरों के सामने प्रगट कर देते हैं। हम चोट की परवाह नहीं करते, और अपनी कमजोरी खुल जाने की परवाह नहीं करते। इन्हीं बातों के लिए हम अपने चारो ओर मोटी मोटी दीवार बना लेते हैं जो हमें सुरक्षा की भावना प्रदान करती है। जी हाँ, परन्तु साथ ही साथ ये दीवारें हमें दूसरों से अलग कर देती हैं। प्रेम हमें खतरे उठाने के लिए आमंत्रित करता है, ताकत के साथ सुरक्षा की दीवार बनाने को नहीं। प्रभु यीशु के जीवन से हम इस बात को सीख सकते हैं। यीशु ने स्वयं को शून्य किया, मनुष्य और अपने बीच की विभाजित करने वाली दीवार को पार किया, और राजा बनने की बजाए एक दास बनने के लिए तैयार हो गया। और उसने अपनी बाँहों को फैलाया, स्वयं को खोल दिया, और अपनी प्रेम भरी गोद में सारी मानवजाति के लिए स्थान बनाया। आइये, हम साथ मिलकर यीशु के पीछे चलते हुए विभाजित करने वाली दीवारों को पार करते चलें।

पास्टर डेनाँग क्रिस्टियावान,
जीआईटीजे जेपारा (जेरेजाइन्जिल डी तनाह जावा) जेपारा, इण्डोनेशिया

2015 में मेनानाइट चर्चेस़ इन ताइवान की 60वीं वर्षगाँठ के अवसर पर एक क्वायर द्वारा गीत प्रस्तुत किया जा रहा है। फोटो: क्योंग जुंग किम

ऐनाबैपटिस्ट विश्व सहभागिता रविवार

नया नियम: फिलिप्पियों 2:1–11

संसार भर में विश्वव्यापी महामारी के कारण लोगों के मन में चिन्ता और अनिश्चितता की भावना समा गई है। हम में से अनेक ने अपने प्रियजनों को खो दिया है। अनेक लोगों की नौकरियाँ जा चुकी है। अनेक लोगों ने अनुभव किया है कि बेघर, वंचित, और घर में बन्द हो जाने का अर्थ क्या होता है। परन्तु इन सारी चिन्ताओं के बाद भी, हम मसीहियों के रूप में, सारी बाधाओं को पार करते हुए यीशु के पीछे चलने के लिए बुलाए गए हैं। मसीहियों के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में कोई भी बाधा हमें रोक न सके।

बाइबल में, अनेक स्थलों में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार से यीशु ने बाधाओं को तोड़ा या पार किया ताकि वह अपने पिता की आज्ञाओं को पूरा करने की अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करे:

- ✻ जब यीशु ने सामरी स्त्री के साथ बात किया, तब उसने धार्मिक, जातीय, और लिंगभेद की बाधाओं को पार किया।
- ✻ जक्कई के साथ भोजन करते समय उसने वर्गवाद और आत्मिकतावाद की बाधाओं को पार किया।
- ✻ यीशु ने कोढ़ियों को शुद्ध करते समय अपने स्वास्थ्य की चिन्ता नही किया। यीशु ने कोढ़ियों को अपने हाथ से स्पर्श किया और उन्हें चंगा किया। यीशु ने इस शारीरिक बाधा को पार किया।

कोई भी बाधा या रूकावट यीशु को रोक न सकी।

हो सकता है कि हम प्रभु का कार्य करने में बहुत सक्रिय हैं, परन्तु हमारी सुरक्षा के प्रति चिन्ता (विश्वव्यापी महामारी से या अन्य कठिनाइयों से) हमारी गति और हमारे कार्यों को सीमित कर देती है। क्या इस प्रकार का डर परमेश्वर के कार्य को न करने का एक बहाना हो सकता है?

इसका उत्तर हम में से अनेक के लिए शायद सरल न हो, परन्तु बाइबल हमारा मार्गदर्शन करती है। बाइबल में नहीं कहा गया है कि हम कोई भी कार्य करने के लिए अपनी बुद्धि का प्रयोग न करें।

हम किस तरह से दूसरों की सहायता कर सकते हैं और सुसमाचार को फैला सकते हैं, बुद्धिमानी के साथ, विपत्ति या भय की परिस्थितियों में भी?

1. **अपने आप को शून्य कर दें** (पद 6–7)
   यीशु ने अपने आप को शून्य कर दिया। यद्यपि वह परमेश्वर था, उसने अपने आप को परमेश्वर के बराबर न समझा। मसीह की दीनता में उसके द्वारा स्वयं को शून्य कर दिया जाना, एक दास का स्वाभाव अपना लेना, और मनुष्य की समानता में हो जाना शामिल था। उसने हमारे लिए सब कुछ छोड़ दिया। यीशु ने अपने ईश्वरत्व, अपनी सामर्थ, और अपनी सर्वोच्चता को छोड़ दिया।

   परमेश्वर की सेवा करने के लिए, यह आवश्यक है कि हम अपने आप को शून्य कर दें। हमें भी स्वयं का, अपनी ताकत का, अपने पद का, अपने अहंकार का, अपनी सुविधा इत्यादि का त्याग करने की आवश्यकता है।

2. **आज्ञाकारिता** (पद 8)
   यद्यपि वह स्वयं परमेश्वर था, वह हमेशा पिता की इच्छा के आधीन रहा। उसने अपने आप को दीन कर दिया। यीशु यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि उसने लोगों का उद्धार करने के लिए क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

   जब प्रभु यीशु पुनरूत्थान के बाद इस पृथ्वी से विदा हो रहा था तो उसने हमें महान आज्ञा को दिया (मत्ती 28:19)। अब इस आज्ञा को पूरा करने की जिम्मेदारी हम पर है। हमें लोगों तक पहुँचना है। हमें उन्हें मसीह के प्रेम के विषय में अपने वचनों और कार्यों के बारे में बताना है। चारो ओर, हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो बेघर हैं, जिनके पास रोजगार नहीं है, भूखें और बीमार हैं: हम उन तक पहुँचने के लिए बुलाए गए हैं।

   बाइबल हमें कहती है कि हम दीन बन कर प्रेम के साथ एक दूसरे की सेवा करें (गला. 5:13)। बाइबल में उदार लोगों के लिए आशीष की प्रतिज्ञा की गई है (नीति. 22:9)। बाइबल में हमें यह आज्ञा दी गई है कि हमें अपनी वस्तुओं को जरूरतमंद लोगों के साथ बाँटना है (लूका 3:11 और लैव्यव्यवस्था 25:35)। यीशु के पीछे चलते हुए, हमें परमेश्वर के वचन का पालन करना है, चाहे हम बुरी से बुरी परिस्थिति का सामना कर रहें हो। यीशु यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि उसने मृत्यु भी सह ली।

3. **दूसरों के हित की चिन्ता करें** (पद 4)
   पौलुस हमें लोभ और बेईमानी से दूर रहने को कहता है। पौलुस चाहता है कि हम अपना ध्यान स्वयं से हटा कर दूसरों पर केन्द्रित करें। जो दूसरों को अपने से पहले रखते हैं वे प्रेम और दीनता के द्वारा मसीह के स्वाभाव को प्रदर्शित करते हैं।

   आपदा और भय की परिस्थितियाँ, जैसा कि विश्वव्यापी महामारी, बहुत से लोगों को लोभी और आशंकित बना देती है। हमारे सामने परीक्षा आती है कि हम दुकानों में जा कर बहुत ढेर सारी वस्तुएं खरीद कर जमा कर लें क्योंकि शायद कल यह उपलब्ध न रहे। बाइबल में इस प्रकार के रवैये के विरुद्ध चेता–वनी दी गई (लूका 12:15)।

   मसीह का अनुसरण करने के लिए, यह आवश्यक है कि हम धन के प्रेम से

मुक्त रहें (इब्रा. 13:5)।

हमारी आवश्यकताओं और हमारे परिवार की आवश्यकताओं की चिन्ता करना बुद्धिमानी है और उचित भी, परन्तु क्या यह भी उचित नहीं कि हम दूसरों की आवश्यकता के समय उनकी चिन्ता करें? क्या हम मत्ती 6:25–26 में दिए गए यीशु के वचनों पर भरोसा रखते हैं?

आइये हम अपने संसाधनों को दूसरों के साथ बाँटना सीखें। मसीह ने कभी भी अपने हित की चिन्ता नहीं किया, परन्तु उसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया। हम दूसरों के लिए जीने और दूसरों के लिए मरने में उसका अनुसरण करते हैं। बाधाओं को पार करने और प्रभु की सेवा करने के लिए हमें यीशु के पदचिन्हों का अनुसरण करने की आवश्यकता है।

परमेश्वर हमें अनुग्रह प्रदान करे कि हम उसके पीछे चलने के लिए स्वयं को शून्य कर दें, यहाँ तक आज्ञाकारी रहें कि मृत्यु भी सह लें, और अपने हित की बजाए दूसरों के हित की अधिक चिन्ता करें।

अमिता सिद्ध, राजनाँदगाँव मेनोनाइट चर्च,
मेनोनाइट चर्च इन इण्डिया

यायोएडाय ब्रदरन इन ख्राइस्ट चर्च इन जापान, फोटोः क्यूंग जुंग किम

Mennonite
World Conference
A Community of Anabaptist
related Churches

ऐनाबैपटिस्ट
विश्व सहभागिता
रविवार

एशिया के भाई बहनों की गवाहियाँ

गहराई से जुड़ने के लिए बाधाओं को पार करें

महामारी के दौरान जब हम एक दूसरे से आमने सामने मिल नहीं पाने के कारण एक दूसरे से अलग हैं, तकनीक ने इस दूरी को समाप्त कर दिया है।

यद्यपि तकनीक हमें पास ला सकती है, यह इस बात की गारण्टी नहीं दे सकती कि हम एक दूसरे के साथ सच्चाई से जुड़े और गुथे हुए हैं। शारीरिक और आभासी निकटता, यद्यपि हम एकदूसरे को देख पा रहे हों, का अर्थ यह नहीं है कि हम एकदूसरे जुड़ हुए हैं।

उदाहरण के लिए, हम ठसाठस भरी एक सिटी बस पर सवार हैं, और यात्रियों के बीच आपस की दूरी 50 सेमी भी नहीं है। कभी कभी तो हम एक दूसरे से पूरी तरह से सटे हुए होते हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम एकदूसरे से जुड़े हुए हैं। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अब भी एक दूसरे से अनजान ही है।

ऐसा कहीं भी हो सकता है, परिवार में भी, परिवार के सदस्य एक साथ इकट्ठे तो होते हैं, परन्तु एक दूसरे से जुड़े हुए नहीं होते। हो सकता है कि छोटा घर और बहुत से सदस्य होने के लिए एक दूसरे के बहुत पास पास रहते हों, परन्तु आवश्यक नहीं है कि हम एकदूसरे जुड़े हुए हों। यह भी हो सकता है कि हमने ऊँची ऊँची बाँऊड्री वाल बना लिया है जो कि हमें हमारे पड़ोसियों के घरों से अलग कर देती है।

हमारे द्वारा बनाई गईं दीवारें, या अवरोध का कारण हमारा आर्थिक, जातीय, राजनैतिक, सैद्धान्तिक, लैंगिक हित हो सकता है।

यह न कहें कि कलीसिया में ऐसा नहीं होता! कलीसिया में, हम एकदूसरे से मुलाकात करते हैं, हाथ मिलाते हैं, एक साथ मिलकर गीत गाते और वचन को सुनते हैं, परन्तु शारीरिक या आभासी रूप में एक साथ एकत्रित होना भी गहरी सहभागिता की गारण्टी नहीं है। यीशु के अनुयायियों के रूप में, हमें गहराई से जुड़ने के लिए इन सारी बाधाओं को पार करना आवश्यक है।

पास्टर डेनाँग क्रिस्टियावान,
जीआईटीजे जेपारा (गेरेजाइन्जिल दी तानाह जावा), जेपारा, इण्डोनेशिया

यिर्मयाह चोए कोविड 19 के दौरान संदेश देते हुए, फरवरी 2020, हाँगकाँग मेनोनाइट चर्च, फोटोः साभार

हाँग काँग में धार्मिक स्वतंत्रता के मुद्दे को लेकर भय

पिछले कुछ वर्षों में हाँग काँग ने जबर्दस्त राजनैतिक परिवर्तन देखें हैं। पुलिस एक के बाद एक कड़ी कार्यवाही कर रही है। ऐसे समय में कलीसिया को किस प्रकार से दृढ़ बने रहना है? विश्वासियों को इन सारी बातों का सामना किस प्रकार से करना है?

जब मैं युवावस्था की ओर बढ़ रहा था, तो सोचता था कि मेरी पीढ़ी अब तक के सबसे अच्छे समय में जी रही है, क्योंकि हमारे पास इलेक्ट्रानिक्स, कम्प्युटर, माइक्रोवेव, टेलीविज़न, फाइबर आपटिक्स और स्पेस हैः ये सारी चीजें पहली वाली पीढ़ी के पास उपलब्ध नहीं थी।

अब, हाँगकाँग में, हम ''अनिश्चित'' पीढ़ी में प्रवेश कर रहे हैं। हम नहीं जानते हैं कि चीन और हमारे रिश्तों के सम्बन्ध में कल क्या होगा। हाँग काँग पर चीन का नियंत्रण बढ़ जाने से कलीसिया पर क्या असर होगा? चीन में धार्मिक प्रणाली हाँग काँग की धार्मिक प्रणाली के बिल्कुल अलग है। नए राष्ट्रीय सुरक्षा कानून का असर अभी हमें नहीं मालूम, कुछ लोगों का मानना है कि यह हाँग काँग और यहाँ की कलीसियाओं के लिए अधिक सुरक्षित सिद्ध होगा, जबकि कुछ लोग इसे लेकर बेचैन हैं। कुछ लोगों को चिन्ता है कि अब हाँग काँग का अन्त हो जाएगा।

आगे जो भी होता है, इस समय हाँग काँग की कलीसिया एक अस्थिरता और अशान्ति का सामना कर रही है, साथ ही आर्थिक उथल पुथल, नौकरियाँ समाप्त हो जाना, और कारपरेट जगत में असफलता की स्थिति बनी हुई है। इसका कारण विश्वव्यापी महामारी का असर नहीं है।
हमारे सामने खड़ी अनिश्चितता की स्थिति में, हम चीन की कलीसिया से सीख सकते हैं कि उसने चीन की सांस्कृतिक क्रान्ति का सामना किस प्रकार से किया था। 1900 में चीन में कलीसियाओं की संख्या 90000 थी, और 2006 में 1 करोड़ सत्तर लाख हो गई। यद्यपि पूरी शताब्दी धर्म पर चीन में कड़ा प्रतिबन्ध था, चीन में मसीहत अब भी फलफूल रही है और अपंजीकृत कलीसियाओं के माध्यम से अपना असर डाल रही है।

हाँग काँग की कलीसियाओं के लिए एक आशा है, भले ही हम भविष्य में अधिक अनिश्चितता और कलीसियाओं पर प्रतिबन्धों के मध्य रहें, और अपनी सुविधाजनक स्वतंत्रता को खो दें। अनेक प्रतिबन्धों के बाद भी कलीसिया फलफूल और बढ़ सकती है, जैसा कि हमने चीन में देखा है।

जेरमियाह चोई, हाँग काँग मेनोनाइट चर्च

शान्ति की कलीसिया

दुनिया के अन्य देशों की तुलना में इण्डोनेशिया में सबसे अधिक मुसलमान रहते हैं। इण्डोनेशिया में तीन ऐनाबैपटिस्ट कॉंफ्रेंस हैं, और कुल सदस्य संख्या 90000 है। गिरजाइन्जिल दी तानाह जावा (जीआईटीजे) इन में से एक है, जो सबसे पुराना कॉंफ्रेंस है, यहाँ विश्वास के आधार पर सबसे पहला बपतिस्मा 1854 में दिया गया था। इण्डोनेशिया में मसीहियों की संख्या बहुत कम है – कुल जनसंख्या का दस प्रतिशत। इण्डोनेशिया के कुछ स्थानों पर कभी कभी मसीही कलीसियाओं को केन्द्रित कर उन्हें हिंसा का भी शिकार बनाया गया।

2009 के आसपास, जेपारा के जीआइटीजे ने इस दर्शन को अपनाया कि वह नगर में एक शान्ति की एक कलीसिया के रूप में स्वयं को स्थापित करेंगी। जेपारा में विभिन्न धर्मों के लोग पाए जाते हैं, और इस पृष्ठभूमि में शान्ति का प्रचार करने का अर्थ होता है दूसरे धर्म के भाइयों और बहनों के साथ अच्छा सम्बन्ध कायम कर रखना। जेपारा की जनसंख्या 11 लाख है, और मुसलमान लोग यहाँ बहुसंख्यक हैं। कलीसिया यह मानती है कि शान्ति का अर्थ सिर्फ संघर्ष का न होना या कम संघर्ष होना नहीं है। शान्ति का अर्थ है, एक दूसरे पर भरोसा रखने वाला अच्छा आपसी सम्बन्ध, भले ही विचारों में मतभेद हो।
इसलिए हम यूनिवर्सिटास इस्लाम नेहदलातुल उल्मा जेपारा (एनयू) जैसे अन्य धार्मिक संगठनों के साथ अच्छा सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। यह हमारी कलीसिया के बहुत निकट स्थित है – सिर्फ 500 मीटर की दूरी पर – परन्तु

इण्डोनेशिया के जेपारा जीआईटीजे कलीसिया में हारजो सुयूतनो ने कलात्मक क्रूस ‘‘कॉस्मिक ख्राइस्ट’’ की डिजाइन तैयार किया है।

हमने कभी एक दूसरे के साथ मिलकर काम नहीं किया है। हमारे बीच कोई अधिक विवाद नहीं हुआ है, परन्तु कोई संवाद भी नहीं हुआ है। समय समय पर उच्च स्तरीय अगुवों के बीच बातचीत हुई है, परन्तु जमीनी स्तर पर इसका कोई असर दिखाई नहीं दिया है। हम नहीं चाहते कि शान्ति सभाओं मात्र में एक चर्चा का विषय बन कर रह जाए, परन्तु यह लोगों के मध्य दैनिक मेलजोल का हिस्सा बनें।

इस कारण, हमने व्यक्तिगत स्तर पर इण्डोनेशियन मुस्लिम कल्चरल आर्ट्स इन्सटिट्यूट (एलईएसबीयूएमआई) के प्रमुख से मुलाकात किया, यह एनयू के आधीन एक कला और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करने वाली एक संस्था है, ताकि हम एक दूसरे के सम्पर्क में रहें और विचारों का अदान प्रदान करें कि हम शान्ति के क्षेत्र में हम किस तरह से साथ मिलकर कार्य कर सकते हैं।
 हमने एनयू भवन की छत पर एक पारम्परिक संगीत (केरोनकोंग) का आयोजन किया और साथ ही साथ सामान्य रूप से बातचीत भी की। हमने जानबूझ पर सांस्कृतिक मीडिया का उपयोग किया क्योंकि कला और संस्कृति लोगों को साथ

लाती है। हमारा लक्ष्य है कि लोग एक दूसरे के साथ मुलाकात करें और स्वाभाविक रूप से एक दूसरे से बातचीत करें। परन्तु इस आयोजन में सिर्फ कलीसिया के ही लोगों ने भाग लिया। मुसलमान भाई बहन नहीं आए। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि लोगों के मन में वास्तव में संदेह और रूढ़िवादी धारणाए हैं। यहाँ तक कि एनयू बिल्डिंग में मसीहियों को आमंत्रित करने के कारण एलइएसबीयूएमआई के अध्यक्ष को धमकी दी गई।

तौभी, कुछ लोग इस कार्य से आकर्षित हुए और अगली सभा का भी आयोजन किया गया, एनयू भवन में एक इण्डोनेशियाई अवकाश (कार्तिनि दिवस) मनाया गया, जिसमें कलीसियाओं के अनेक समूहों ने जान डाल दिया। इस बार, अनेक लोग आए, और मीडिया की ओर से भी अच्छी प्रतिक्रिया मिली, क्योंकि इससे पहले इस तरह का कुछ भी नहीं हुआ था।

जीआईटीजे केलेत, इण्डोनेशिया में बच्चों का क्वायर। फोटो: साभार

इसके अतिरिक्त, कलीसिया द्वारा नियमित रूप से अन्तराष्ट्रीय शान्ति दिवस का आयोजन प्रत्येक 21 सितम्बर को कलीसिया भवन के सामने किया जाता है, और इस अवसर पर विभिन्न धर्मों के लोगों के द्वारा कलात्मक और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं, साथ ही अनेक समूहों द्वारा शान्ति के विषय पर व्याख्यान दिया जाता है।

हमारा लक्ष्य अभी भी वही है, अर्थात्, मुसलमानों और मसीहियों को साथ लाना ताकि एक दूसरे के साथ अनौपचारिक रूप से मिलजुल सकें। आपसी सहयोग अभी भी कायम है, और इसमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए, कलीसिया की महिलाएं एनयू भवन में मुसलमान महिलाओं के साथ मिलकर भोजन का प्रबन्ध करती हैं और इस भोजन को महामारी से प्रभावित समुदायों तक पहुँचाया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दिवस में बच्चे भी शामिल होते हैं, जवान शान्ति से सम्बन्धित प्रस्तुतियों में भाग लेते हैं।

इसका परिणाम यह हुआ कि जेपारा में जीआईटीजे मण्डली और मुसलमानों के बीच का सम्बन्ध अब बहुत अच्छा हो गया है।

जीआईटीजे में, हम सूफी और शिया मुसलमान समुदाय के अपने साथियों के साथ भी अच्छा सम्बन्ध बनाने के लिए कार्य करते हैं, ये दोनों मुसलमान समुदाय के छोटे समूह हैं। अनेक बार, हम अलग अलग धर्मों के युवाओं के बीच मित्रता कायम करने के लिए शिविरों का आयोजन करते हैं। कुछ समय पहले, कलीसिया में शिष्यता के विषय पर एक कक्षा में, हमने मुसलमान भाइयों को बुलाया कि वे इस्लामी दृष्टिकोण से यीशु मसीह के बारे में अपने विचार व्यक्त करें। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है ताकि कलीसिया सीधे सीधे उन्हीं के माध्यम से इन बात को समझे। यह मित्रों और सम्बन्धियों के रूप में एक दूसरे को सम्मान देने का सूचक है।

अलग अलग धर्मों के लोगों के साथ सम्बन्ध कायम करने के लिए परस्पर भरोसा, एक दूसरे को स्वीकार करना, और एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। औपचारिक संस्थागत सम्बन्धों की बजाए मित्रों के रूप में सम्बन्ध कायम करने पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है। मित्रता के इस व्यक्तिगत सम्बन्ध के माध्यम से, एक दूसरे से दीनतापूर्वक सीखने की भावना उत्पन्न होती है, सन्देह की जो दीवार बन चुकी है उसे पार करने का साहस मिलता है। वास्तव में गलत समझे जाने का एक जोखिम बना रहता है, परन्तु कदम उठाने का साहस किए बिना सीमाओं को पार करना सम्भव नहीं है।

आपसी भरोसा का एक उदाहरण तब दिखाई दिया जब पास्टर डेनांग क्रिस्टियावान का 2013 में जेपारा के पासवान के रूप में अभिषेक किया गया। जेपारा समुदाय के मित्रों ने आकर सुफी नृत्य, बुडि हारजोना नामक एक राजनेता की ओर से पढ़ी गई एक कविता, और बाइबल कॉलेज के एक छात्र के द्वारा गाए गए मसीही गीत में मुसलमानों के द्वारा वायलिन व एक कैरिसमैटिक पासवान पियानो बजाने के द्वारा ''भेंट अर्पण'' की गई। यह सब बहुत अच्छे से हुआ और सबके लिए एक सुखद आश्चर्य था।

इसी तरह से, जब इस्लामिक बोर्डिंग स्कूल के भाइयों व बहनों के द्वारा एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, तो उन्होंने कलीसिया के लोगों को भी आमंत्रित किया, और उन्हें सन्देश सुनाने का भी अवसर दिया। यह सब कुछ शिया इस्लामी समूहों में हुआ, जिनके साथ इण्डोनेशिया में अक्सर भेदभाव किया जाता है।

वार्तालाप, एक दूसरे से मुलाकात, और शान्ति के सम्बन्ध में एक दूसरे के साथ चर्चाओं का क्रम बढ़ता जा रहा है। सभाओं, सामूहिक भोज, सामूहिक खेलकूद, और विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच एक सेतु बनने के अनुभवों में, हम अपने संगी मनुष्यों में परमेश्वर के मुख को देख कर अचम्भित हैं।

– एमजे इक्सानुद्दीन, एमडब्ल्यूसी कार्यकारिणी सदस्य,
जीआईटीजे (गिरजाइन्जिल दी तनाह जावा),
सेमरांग, इण्डोनेशिया

लॉकडाऊन के समय भलाई

“हमें राज्य सरकार के द्वारा सिर्फ चावल उपलब्ध कराया गया था और कुछ भी नहीं, हमने अनेक दिनों तक भोजन के रूप में सिर्फ चावल ही खाया। मुझे चिन्ता थी कि इस लॉकडाऊन की अवधि में अपने परिवार के लिए भोजन का प्रबन्ध किस प्रकार से करूं। मैं एक दैनिक मजदूर हूँ। ऐसे समय में, हमारे पासवान एक थैला लेकर हमारे पास आए और मुझसे कहा कि यह मेनोनाइट चर्च राजनाँदगाँव (मेनोनाइट चर्च इन इण्डिया की एक मण्डली) के भाई बहनों की ओर से आपके लिए भेजा गया है। जब हमने इस थैले को खोला, तो इसमें राशन और वे सारी आवश्यक वस्तुएं थी, जिनकी उस समय हमें बहुत आवश्यकता थी।”

– राहुल, मेनोनाइट चर्च, कांकेर के सदस्य

“राशन का समान बहुत दिनों के लिए पर्याप्त था।”

– श्रीमती आश्रिता दयाल, मेनोनाइट कुसुमकसा की सदस्या, 69 वर्षीय बहन जिनके पति की मृत्यु हो जाने कारण अकेली रहती हैं।

“हम बहुत अधिक कठिनाईयों का सामना कर रहे थे, हमें भोजन की आवश्यकता थी, और मसीह में हमारे भाई बहनों के माध्यम से हमारी यह आवश्यकता पूरी हुई।”

– पास्टर रोहित मरकाम, भानुप्रतापपुर के एक स्वतंत्र पासवान।

ऐसी ही अनेक गवाहियाँ हैं। जब हम भलाई करने के लिए अपना हृदय खोलते हैं, तो परमेश्वर यह कार्य करता है।

एक कलीसिया के रूप में, हम प्रभु से यह प्रार्थना कर रहे थे कि वह विश्वव्यापी महामारी के इस समय में अपने आसपास के लोगों की सुधि लेने के लिए हमें संवेदनशीलता प्रदान करें। एक छोटी रकम के साथ हमने यह निर्णय लिया कि गाँवों में निवास करने वाले उन भाई बहनों की फौरी आवश्यकताओं को पूरा करें जो लॉकडाऊन के कारण बेरोजगार हो गए हैं। राज्य सरकार सिर्फ चाँवल का प्रबन्ध कर रही है, इसलिए हमने अन्य राशन व आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराने का निर्णय लिया। इस छोटे से प्रयास से 67 परिवारों की आवश्यकताएं पूरी हुईं।

गिलगाल मिशन ट्रस्ट मण्डली, जनवरी 2016।
फोटोः अर्लि क्लासन

हमारे साथ सबसे अच्छा यह हुआ कि हम अपने आसपास के लोगों की आवश्यकताओं के प्रति अपने हृदय को रुखा होने से बचा सके।

– विकल प्रवीण राव,
मेनोनाइट चर्च इन इण्डिया, राजनाँदगाँव, भारत

जीवन के जल की गवाही

भारत रंगों से भरा देश है, यहाँ अनेक जातियों व धर्म के लोग निवास करते हैं, और यह सब ऐसी बाधाओं का सूचक है जो लोग को अलग कर रखती हैं। दक्षिण भारत में, जाति सम्बन्धित अवरोध अत्यंत सशक्त हैं।

श्रीमती एलिज़ाबेथ कुरूपाटल गिलगाल मिशन चर्च की एक सदस्या हैं, जिन्होंने अपने जीवन के द्वारा मसीह की गवाही देने के माध्यम से अपने गाँव के अनेक लोगों के हृदय को छुआ है। वे गोंडूर नामक एक पारम्परिक हिन्दू उच्च जाति से आती हैं, जो धार्मिक रीतिविधियों के मामले में अत्यंत कट्टर होती है। एक ऊँची जाति की स्त्री होने के कारण, उन्हें अपनी पहचान को लेकर अत्यंत घमण्ड था। वह अपने गाँव की एक धनी स्त्री है। उनके दो बेटे और एक बेटी है, और सभी का विवाह हो चुका है और वे भारत के बड़े बड़े शहरों में निवास कर रहे हैं। वे स्वयं मदाथुकुलम में अपने गृहनगर में अकेले रहती हैं।

यह उनसे सम्बन्धित एक घटना है, उनके पड़ोसियों और उनके शत्रुओं ने उनके धन के कारण जादू टोना का सहारा लेते हुए उन पर शाप ला कर उनके बदला लेने का प्रयास किया। वे अपने सारे मन्दिरों में गई और बहुत सारे संस्कार पूरे किए, परन्तु उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ।

इस असहाय दशा में, एक विश्वासी उन्हें कलीसिया में ले कर आया। सारी कलीसिया एक होकर उनकी चंगाई के लिए प्रार्थना करने लगी। प्रार्थना के माध्यम से, वे बुरी आत्मा से पूरी तरह चंगी हो गई।

उसके बाद उन्होंने कलीसिया में आना आरम्भ किया और उन्होंने अपने हृदय में परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव किया। कुछ महिनों के बाद, उन्होंने बपतिस्मा लिया और मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। परन्तु बपतिस्मा के बाद सांस्कृतिक और धार्मिक अवरोधों के कारण उनके बच्चों, उनके रिश्तेदारों और उनके पड़ोसियों ने उन्हें ठुकरा दिया। ऊँची जाति के लोग मसीहियों को अछूत मानते हैं क्योंकि वे हमेशा निर्धनता में जीवन व्यतीत कर रहे लोगों का विकास करने और उन्हें ऊपर उठाने के लिए कार्य करते हैं।

परन्तु एलिज़ाबेथ अपने इस विश्वास में काफी मजबूत थी कि यीशु मसीह ने उनके जीवन की सारी समस्याओं से बाहर निकलने में उनकी सहायता किया है। किन्तु कलीसिया में, प्रभु भोज की सहभागिता के दौरान, एक बार फिर से सांस्कृतिक बाधाएं उनके मन में हावी होने लगी जब कलीसिया ने रोटी तोड़ी और एक कटोरे में से पिया। ऊँची जाति की व्यक्ति होने के कारण, एक ही कटोरे और एक ही रोटी को सबके साथ बाँटने को लेकर उनके मन में अनेक प्रश्न आने लगे। पहले तो उन्हें समझ में ही नहीं आया कि वह इन बातों पर किस प्रकार से विचार करे। बाद में, वह समझ गई कि यीशु ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपनी जान दी है, ताकि प्रत्येक के जीवन का एक एक अवरोध जाता रहे, और वह इस संसार के प्रत्येक तथाकथित अवरोध से छुटकारा प्राप्त करे, जिसमें जाति की भी बाधाएं थी।

इस घटना के बाद, उसने विभिन्न समुदायों के लोगों के घरों में जाकर प्रार्थना समूहों में भाग लेना आरम्भ किया, चाहे वे किसी भी जाति के हों, और उन्होंने खुशी के साथ परमेश्वर के प्रेम के बारे में बाँटना आरम्भ किया, जो हमारी भलाई के लिए हमारे जीवनों में हर प्रकार के अवरोधों को तोड़ देता है। अपनी गवाही के माध्यम से, वह तीन परिवारों को मसीह के पास लाने में सफल रही, और उन सभों ने कुछ ही समय बपतिस्मा भी ले लिया है।

पहले तो, उसने प्रभु यीशु को उसके लिए एक समस्या का समाधान करने वाला समझा, परन्तु बाद में वह समझ गई कि यीशु किसी एक समुदाय, या जाति या व्यक्ति का परमेश्वर नहीं है। यीशु इस संसार में इसलिए आया कि सारी सांस्कृतिक, राजनैतिक, आत्मिक, और आर्थिक बाधाओं को तोड़ कर हमें मसीह में एक करने के द्वारा परमेश्वर के प्रेम को इस संसार पर प्रगट करे। वर्तमान में, उन्होंने अपने घर में समुदाय के सब प्रकार के सदस्यों के लिए एक छोटे प्रार्थना समूह का आरम्भ किया है ताकि वे वहाँ आ कर प्रार्थना करें और यीशु के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें।

– पॉल पीनहास, एमडब्ल्यूसी कार्यकारिणी सदस्य,
और गिलगाल मिशन ट्रस्ट, केरला, भारत के प्रमुख।

एशिया से कुछ सांस्कृतिक सुझाव

1. भारत में अनेक मण्डलियों में यह परम्परा है कि पुलपिट में ''जूते/चप्पल'' पहन कर नहीं चढ़ते, और ग्रामीण क्षेत्र की अनेक कलीसियाओं में तो आराधना भवन में भी जूते चप्पल पहन कर भीतर आने की अनुमति नहीं है। एमडब्ल्यूसी की कलीसियाओं को उत्साहित किया जाता है कि ऐनाबैपटिस्ट विश्व सहभागिता रविवार को इस परम्परा को अपनी अपनी कलीसिया में अपनाएं।

- आराधना के स्थान को पवित्र माना जाता है, और जूते गंदे होते हैं, इसलिए जूतों को दरवाजे के बाहर उतारा जाता है।
- कुछ मण्डलियों में जूतों को पुलपिट पर चढ़ने से पहले ही उतारा जाता है क्योंकि समझा जाता है कि ऐसा करना परमेश्वर को सम्मान देना है, जिस तरह से जलती हुई झाड़ी के पास मूसा से उसके पाँवों के जूतों को उतार देने का कहा गया था।
- कुछ मण्डलियों में लोग नीचे जमीन पर बैठते हैं: सफाई और स्वास्थ को ध्यान में रखते हुए, भवन में प्रवेश से पहले जूतों को उतारा जाता था।
- कुछ मण्डलियों में इस परम्परा को इसलिए निभाया जाता था ताकि यह दर्शाया जा सके कि मसीही विश्वास एक पश्चिमी धर्म नहीं है, परन्तु स्थानीय परम्पराओं और रीतिविधियों से जुड़ा हुआ है। यह परम्परा हिन्दू धर्म से जुड़ी हुई है जहाँ जूतों को अशुद्ध माना जाता है क्योंकि ये गाय के चमड़ों से बनाए जाते हैं, जो कि हिन्दू मान्यता के अनुसार पवित्र मानी जाती है। हिन्दू मन्दिर में प्रवेश करने से पहले हमेशा अपने जूतों को उतार देते हैं, और अनेक मसीही भी अपने आराधना स्थनों में प्रवेश करने से पहले ऐसा ही करते हैं।

जेकेआई होली स्टेडियम, सेमरांग में नृत्य के माध्यम से आराधना करते हुए। इण्डोनेशिया, फोटो: साभार

2. इण्डोनेशिया में, होली स्टेडियम सेमरांग में आराधना करने वाली मण्डली (जेमात क्रिस्टेन इण्डोनेशिया – जेकेआई) आराधना के दौरान संगीत के धुन में नृत्यु को भी शामिल करती है। यह रचनात्मकता, अर्थपूर्ण कला को दर्शाता है और प्रभु की आर–ाधना की एक अन्य ''भाषा'' है। ह्रदय की अभिव्यक्ति, और हरकतें परमेश्वर के प्रति सम्मान, आराधना, आनन्द, और धन्यवाद को दर्शाती हैं। नृत्य के दौरान खंजरी, रिबन, बैनर, और अन्य वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है।

हरकतों को सामान्यत: विशेष अर्थ प्रदान किया जाता है; स्वरूप कलीसियाओं में प्रचलित हैं। नृत्य दल आराधना के अगुवे और संगीत अगुवे का अनुसरण करता है, और वे एक मन हो कर मण्डली के लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति का अनभुव करने में अगुवाई करते हैं।